पानी को पानी की तरह न बहाएं

अभय कुमार जैन
भवानीमंडी (राजस्थान)

प्रकृति की अनुपम बेशकमती सौगात है पानी। दुनिया में नहीं उसका कोई विकल्प और सानी। वक्त का तकाजा है उसकी अहमियत समझें और कद्र करें, दूसरों की जरूरत ध्यान में रख इसे न बहायें बेकार, जल है अनमोल इसकी कीमत दिल से करें स्वीकार **–डॉ. सेवा नन्दलाल**

"पानी हमारी जान है, जीवन की पहचान है"
"जिस देश में जल है, उस देश का कल है"
"जन–जन का यही नारा है, पानी सबसे प्यारा है"
"जल जीवन से प्यारा है, यही हमारा नारा है"

पिछले साल आई वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम की एक रिपोर्ट ने जल संकट को 10 शीर्ष खतरों में सबसे ऊपर रखा है। फोरम की 10वीं ग्लोबल रिस्क रिर्पोट में जल संकट को शामिल किया गया है। वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम की रिर्पोट में ऐतिहासिक रूप से यह पहली बार हुआ है जब ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट में जल संकट को बड़ा वित्तीय और संवेदनशील मुद्दा माना गया है।

पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र ने विश्व के सभी देशों को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि पानी की बर्बादी को जल्द नहीं रोका गया तो विश्व गम्भीर जल संकट से गुजरेगा। दुनिया की आबादी जिस गति से बढ़ रही है उसको देखते हुए पानी की खपत में निरन्तर इजाफा होगा।

आप सब ने यह महसूस किया होगा कि एक परिवार को जितना पानी चाहिए उतना एक कूलर पी जाता है, एक गांव को जितना पानी चाहिए उतना एक कल कारखाने को चाहिए, आखिर पानी की खपत कितनी बढ़ रही है।

आज हम सबका यह नैतिक, धार्मिक व राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हमें पानी के बचाव के लिए उसकी खपत को कम करने के लिए हर संभव उपाय करना चाहिए।

हम पानी बना नहीं सकते सिर्फ बचा सकते हैं

पानी बचाएं

- हम प्रातः काल उठकर मंजन व ब्रश करते हैं, एक मग या एक गिलास में पानी लेकर मंजन करें।

- वॉश बेसिन में नल खोकर ब्रश करते हैं जो गलत तरीका है इससे एक व्यक्ति के ब्रश में ही 5/7 लीटर पानी लगना साधारण बात है। अतः मग में पानी लेकर ब्रश करें। शेव करते समय भी एक मग में पानी लेकर शेव करें।

- अधिकांश लोग नल या फव्वारा चलाकर नहाते हैं ये तरीका भी पानी फिजूल खर्च करने का है। एक बाल्टी में पानी लेकर स्नान करें। जब बहुत से किसान भाई कुएं पर रहते हैं उन्हें चाहिए कि जब सिंचाई के लिए पानी छोड़े तब [illegible]हाएं। हां, इस बात का ध्यान रखें कि साबुन वाला पानी सिंचाई में नहीं जाये।

- कपड़े धोने के बाद वाला पानी एकत्रित कर लें। इस पानी से फर्श व वाहन धोना चाहिए। वाहन धोने के लिए पाइप का इस्तेमाल नहीं करें ना ही मग से पानी डालें। इसके विपरीत एक टब या बाल्टी में पानी लेकर कपड़े से धोयें, काफी पानी की बचत हो सकती है।

- फर्श की सफाई करते समय भी पाइप का प्रयोग न करें, बाल्टी में पोछा लगाकर सफाई करें। काफी पानी बच जायेगा।

- बर्तनों की सफाई करते समय हम या बाई नल चलाकर बर्तन धोते हैं इसके लिए हमें चाहिए कि एक बड़े टब में पानी लेकर उसमें बर्तनों को डाल कर धोयें।

- सब्जियां धोते समय भी नल चलाकर न धोयें, एक बर्तन में पानी लेकर उसमें कुछ देर भिगोयें ताकि कुछ ही देर में सब्जी अच्छी तरह साफ हो जाये।

- किसान भाई भी बाजार में जब सब्जियां लायें तो उन्हें साफ करने के लिए कुंए पर जो हौज होता है उसमें सब्जियां डाल दें ताकि मिट्टी इत्यादि साफ हो जायेगी तथा पानी की भी बचत होगी।

- खेतों पर किसान भाई, मजदूर काम करते हैं तथा पानी पीने के लिए कई बार मोटर चलाते हैं या बाल्टी से पानी निकालते हैं किसान भाईयों को चाहिए कि कुंए पर ही एक मटका–मटकी पानी भर कर रखें व दिन भर उसे ही काम में लें। इससे व्यर्थ का पानी बहकर नहीं जायेगा।

- गांव, नगरों में जब बरसात का पानी आता है तो पाइप (नारदाने) से काफी पानी एक साथ निकलता है इसे भी ड्रम या बाल्टी में एकत्रित कर दिनभर घरेलू कार्य में उपयोग लिया जा सकता है। इससे बरसात के दिनों में घरेलू उपयोग में होने वाला पानी बचेगा।

- घरों में गमले व किचन गार्डन होता है। गर्मी के दिनों में व जाड़े के दिनों में रसोई से निकलने वाला पोछे का पानी (बिना साबुन वाला) गमलों में डाला जा सकता है। पेड़–पौधों में पानी शाम के समय दें ताकि कम पानी में अधिक नमी रहे।

- भवन निर्माण के समय सीमेंट के काम में तराई आवश्यक होती है, वैसे तो 12 ही महीने भवन निर्माण का कार्य चलता है किन्तु आप जब स्वयं का कार्य करवायें तो बरसात के दिनों में करवायें ताकि स्वतः ही अच्छी तरावट हो जाये इसके अलावा पहले तराई ऊपर से करें ताकि पानी नीचे की तरफ आवे। इसके अलावा बारदाने के टुकड़े रखकर उन्हें भिगोये कम पानी में अधिक समय तक तरावट रहेगी, इससे पानी की बचत होगी।

- अपने पालतू पशुओं को भी कपड़े धोने के बाद वाले पानी से नहलायें, इसके अलावा बाहर खुली जगह में नहलायें, जहां पानी की जरूरत हो ताकि पानी गार्डन में जावे या फुटपाथ हो वहां सफाई हो सके।

- सार्वजनिक स्थानों–स्टेशन, प्याऊ, कार्यालयों, प्रतिष्ठानों पर नल खुले हो तो बंद करें। पुश वाले नल लगायें। घरों व अन्य स्थानों पर लीकेज हो तो ठीक करवायें।

- पाइप लाइन फूटने पर तत्काल संबंधित विभाग को सूचित कर दुरूस्त करवायें। आजकल कई गांवों, शहरों में जब नलों में पानी आता है तो व्यर्थ बहता रहता है क्योंकि उसमें टोंटी नहीं लगी होती है, अतः टोटी लगाकर रखें। जब नल में पानी आये तो उसे खोलकर पानी भरे।

- घरों में भी महिलाएं नलों को खोलकर छोड़ देती हैं। जब पानी आता है तो व्यर्थ ही बहता रहता है। अतः हमेशा नल बंद करके रखना चाहिए। कई बार ऐसा भी हुआ है कि हम बाहर चले जाते हैं व नल खुला रह जाता है तो घरों में पानी भर जाता है। अतः बाहर जाने से पूर्व अपने नल बंद करके जायें। पानी की बर्बादी भी रूकेगी तथा आपका नुकसान भी नहीं होगा।

- घरों में टंकियां खुली रहती हैं तथा जल आने पर पानी उनमें भरा जाता है तथा कई बार टंकी पूरी भर जाने पर पानी व्यर्थ ही बहता रहता है अतः उसमें ओवर फ्लो वॉल्व लगा होना चाहिए ताकि टंकी भरते ही नल स्वतः ही बंद हो जाये।

- होटलों में प्रायः ग्राहक आते ही पानी का गिलास प्रस्तुत किया जाता है। जहां तक हो सके, सभी जगह–घरों, होटलों व सार्वजनिक स्थानों पर छोटे गिलासों का प्रयोग करें। ग्राहक कई बार थोड़ा सा पानी पीकर छोड़ देता है।

- जब भी घरों में टंकिया, कूलर, साफ किये जाते हैं तो काफी पानी व्यर्थ जाता है। इस पानी को पेड़–पौधों व गमले में लगे पौधों में प्रयोग करें।

- हमारे नीति निर्धारकों, राजनेताओं, अधिकारियों को चाहिए कि पाठयक्रमों में इस प्रकार की जानकारी दें कि वह पानी बचाने हेतु प्ररेणा ले सकें। स्कूलों, विद्यालयों, महाविद्यालयों में इस प्रकार के आयोजन, प्रतियोगिताएं, भाषण, विचार–विमर्श हों ताकि छात्र–छात्राएं, पानी की महत्ता समझकर पानी बचाने का कार्य स्वतः कर सकें क्योंकि ये छात्राएं ही आगे चलकर गृहणियां बनेंगी।

उपरोक्त तरीके अपनाकर हम पानी बचाने में कामयाब हो सकते हैं।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत